सनातन भारत
जागृत भारत

भारतवर्ष एवं भारतीयोंके माहात्म्यकी यशोगाथा

जितेन्द्र बजाज
मण्डयम् दोड्डमने श्रीनिवास

समाजनीति समीक्षण केन्द्र चेन्नै

अनुवाद: जितेन्द्र बजाज एवं नीरू

सर्वाधिकारी: **समाजनीति समीक्षण केन्द्र, चेन्नै २००४**
डा. जितेन्द्र बजाज द्वारा समाजनीति समीक्षण केन्द्र चेन्नै से प्रकाशित

टङ्कण-सज्जा: रामज़ क्रिएटिव चेम्बर चेन्नै
मुद्रण: डी.के. फाइन आर्ट प्रेस, नयी दिल्ली

आवरण: श्रीरामेश्वर मन्दिर, एल्लोरा (गुहा २१) में उत्कीर्ण श्रीयमुनाजी समेत श्रीगङ्गाजी का चित्र

आईएसबीएन ८१-८६०४१-१७-६
ISBN 81-86041-17-6

विश्वकी कदाचित् दो ही सभ्यताएँ हैं जो अतिप्राचीन कालसे अबतक अनिर्बाध प्रवाहित होती चली आ रही हैं। इस दृष्टिसे हमारे समकक्ष दूसरी सभ्यता चीनकी है। अपने इस दीर्घ इतिहासके प्रायः समस्त कालोंमें भारतीय ही नहीं भारतके बाहरसे यहाँ आनेवाले आक्रान्ता और पर्यवेक्षक भी भारतको अत्युच्च भौतिक समृद्धि एवं उससे भी कहीं ऊँची आध्यात्मिक समृद्धिसे सम्पन्न विशिष्ट भूमिके रूपमें देखते रहे हैं। गत कुछ शताब्दियोंके परकीय शासनके कालमें भारतके लोग अपनी इस विशेषताको भूल बैठे हैं, अंग्रेजी प्रशासकोंद्वारा गढ़े गये कपोलकल्पित इतिहासको सत्य मानकर वे अपनी भूमि एवं अपनी सभ्यताकी महत्ताको नकारने लगे हैं। भारतके लोग अपने मनमें ही अपने गौरवसे वञ्चित हो बैठे हैं।

अपनी सहज स्वाभाविक भौतिक एवं आध्यात्मिक समृद्धिको पुनः प्राप्त करनेके लिये हमें अपनी नैसर्गिक एवं सभ्यतागत सम्पदाओंका पुनः स्मरण करना होगा। अपनी सहज समृद्धिकी स्मृति लौट आयेगी तो उस समृद्धिको पुनः प्राप्त करनेके सम्यक् प्रयास करनेका संकल्प एवं बल भी हममें आ ही जायेगा।

इस पुस्तक और इससे जुड़ी प्रदर्शनीमें भारतवर्षकी सहज सम्पदाओंको स्मरण करनेका किञ्चित् प्रयास किया गया है। कोयम्बत्तूरमें लगे स्वदेशी मेलेके लिये सन् २००१ ईसवीके प्रारम्भमें प्रथमतः अंग्रेजीमें इस पुस्तक और प्रदर्शनीकी रचना की गयी थी। यह हिन्दी रूपान्तर जितेन्द्र बजाज एवं भागनेय नीरूका सम्मिलित प्रयास है।

चेन्नै
अक्षय तृतीया कलि सम्वत् ५१०६
तदनुसार २२ अप्रैल २००४ ईसवी

सनातन भारत

जागृत भारत

अनुपम प्राकृतिक सम्पदासे सम्पन्न भारतभूमि

समाजनीति समीक्षण केन्द्र चेन्नै

Centre for Policy Studies WWW.CPSINDIA.ORG

विस्तीर्ण एवं समृद्ध भूमि

भारतवर्ष विश्वके अति-विस्तीर्ण भूखण्डोंमें से एक है। काश्मीरसे कन्याकुमारीतक उत्तर-दक्षिण दिशामें ३,२०० किलोमीटर और आसामसे बलूचिस्तानतक पूर्व-पश्चिम दिशामें ३,५०० किलोमीटरतक इसका विस्तार है। कुल ४२ करोड़ ३५ लाख हेक्टेयरका विशाल क्षेत्र इसकी परिधिमें आता है।

ऐतिहासिक और भौगोलिक दृष्टिसे यह सम्पूर्ण क्षेत्र सर्वदा एकात्म अभिन्न भारतभूमिके रूपमें जाना जाता रहा है। आज यह भूमि भारतीय संघ, पाकिस्तान और बांग्लादेशकी तीन स्वतन्त्र राजनैतिक इकाइयोंमें विभाजित है। भारतवर्षके कुल ४२ करोड़ ३५ लाख हेक्टेयर क्षेत्रमें से प्रायः ३२ करोड़ ८७ लाख हेक्टेयर भारतीय संघमें है, ८ करोड़ ४ लाख हेक्टेयर पाकिस्तानमें और १ करोड़ ४४ लाख हेक्टेयर बांग्लादेशमें।

भौगोलिक विस्तारमें भारतवर्ष विश्वका सातवाँ सबसे बड़ा भूखण्ड है। रूसी संघ (१ अरब ७० करोड़ ८० लाख हेक्टेयर), चीन (९६ करोड़ हेक्टेयर),अमरीकी संयुक्तराज्य (९३ करोड़ ६० लाख हेक्टेयर), कनाडा (९२ करोड़ २० लाख हेक्टेयर), ब्राज़ील (८५ करोड़ १० लाख हेक्टेयर) और ऑस्ट्रेलिया (७८ करोड़ ६० लाख हेक्टेयर) का विस्तार भारतवर्षसे अधिक है। पश्चिमी यूरोप (३७ करोड़ १० लाख हेक्टेयर) का विस्तार भारतीय संघसे किञ्चित् अधिक है, परन्तु भारतवर्षसे अधिक नहीं।

भौगोलिक विस्तारमें भारतवर्षका स्थान चाहे विश्वमें सातवाँ हो, भौगोलिक एवं प्राकृतिक सम्पदाकी दृष्टिसे यह भूमि निश्चय ही सातवें स्थानपर नहीं आती। वस्तुतः भारतवर्ष विश्वके समृद्धतम भूखण्डोंमें से एक है। इस अद्वितीय समृद्धिका वर्णन हम आगे करेंगे।

विश्वका सबसे बड़ा कृषिक्षेत्र

भारतवर्ष विस्तारमें विश्वकी कतिपय बड़ी भौगोलिक एवं राजनैतिक इकाइयोंसे लघु अवश्य है, परन्तु उन सबसे कहीं अधिक सुगठित एवं सुसज्जित है। अपने अपेक्षाकृत सीमित आकारमें हमारी यह भूमि विश्वके सबसे बड़े कृषिक्षेत्रको संजोये हुए है। भारतवर्षके प्रायः ६० प्रतिशत भागपर कृषि सम्भव है। विश्वके अन्य वृहद् एवं सम्पन्न क्षेत्रोंका २० प्रतिशतसे अधिक भाग कृषियोग्य नहीं होता। विश्वके कुल भूक्षेत्रके केवल १० प्रतिशतपर ही खेती की जा सकती है।

प्रकृतिकी इस विशेष उदारताके परिणामस्वरूप भौगोलिक क्षेत्रकी दृष्टि से विश्वमें सातवें स्थानपर आनेवाली भारतभूमि कृषियोग्य भूमिके मापदण्डपर विश्वमें प्रथम स्थानपर पहुँच जाती है। भारतवर्षका १९ करोड़ हेक्टेयर क्षेत्र कृषियोग्य है, इसमें से १६ करोड़ हेक्टेयर भारतीय संघके भागमें आता है। अमरीकी संयुक्तराज्यका कुल कृषियोग्य क्षेत्र १७ करोड़ ७० लाख हेक्टेयर, रूसी संघका १२ करोड़ ६० लाख हेक्टेयर, चीनका १२ करोड़ ४० लाख हेक्टेयर, पश्चिमी यूरोपका ७ करोड़ ७० लाख हेक्टेयर, ऑस्ट्रेलियाका ५ करोड़ ६० लाख हेक्टेयर और ब्राज़ीलका ५ करोड़ ३० लाख हेक्टेयर है।

भारतवर्षके अन्तर्गत विश्वका यह सबसे बड़ा कृषिक्षेत्र अपनी सहज उर्वरतामें विश्वके समृद्धतम क्षेत्रोंमे गिना जाता है। इसीलिये, भूगोलविद् सघन-सुगठित भारतीय भूखण्डका वर्णन करते हुए सदा अतिशयात्मक विशेषणोंका उपयोग करते रहे हैं।

हिमालयसे संरक्षित एवं संवर्धित भूमि

भारतीय भूखण्डकी विशिष्टताका रहस्य हिमालयमें निहित है। हिमालय विश्वका महानतम पर्वत है। भारतभूमिके उत्तरमें फैली इस २,४०० किलोमीटर लंबी और २०० से ४०० किलोमीटर चौड़ी पर्वत-शृङ्खलाको प्रायः 'पृथिवीके शीर्ष' की संज्ञा दी जाती है। विश्वके सर्वोच्च तीन पर्वतशिखर हिमालयके अङ्ग हैं। २९,०२८ फुट (८,८४८ मीटर) ऊँचे गौरीशंकरका स्थान विश्वमें प्रथम है और २८,२५० फुट (८,६११ मीटर) ऊँचा कोगिर एवं २८,२०८ फुट (८,५९८ मीटर) ऊँचा काञ्चनजङ्घा शिखर दूसरे और तीसरे स्थानपर आते हैं। इनके अतिरिक्त २५,००० फुटसे अधिक ऊँचाईके प्रायः ५० अन्य शिखर हिमालयशृङ्खलामें स्थित हैं। इस शृङ्खलाकी माध्य ऊँचाई १५,००० फुट है। लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाईमें हिमालय विश्वमें अतुलनीय है।

परन्तु हिमालयकी महत्ता मात्र इन आँकड़ोंमें नहीं है। भारतवर्ष के त्रिविम मानचित्रमें हिमालय-पर्वत अपने पूर्वी एवं पश्चिमी छोरोंपर दक्षिणकी ओर मुड़ती गौण शृङ्खलाओंके साथ ऐसा प्रतीत होता है मानो किसी बड़े-बूढ़ेने अपनी दोनों भुजाएँ फैलाकर इस भूमिको अपने वक्षमें समेट रखा हो। वस्तुतः पितास्वरूपी किसी बड़े-बूढ़ेके समान ही हिमालयपर्वत भारतभूमिका अत्यन्त उदारतापूर्वक पोषण एवं संरक्षण करता रहा है।

भौगोलिक दृष्टिसे हिमालय जितना भारतका है उतना ही तिब्बतका भी है। परन्तु हिमालयकी सारी उदारता भारतभूमिके लिये सुरक्षित है। अपने उत्तरी अथवा दक्षिणी विस्तारोंपर बरसनेवाले और दोनों ओर पिघलती हिमसे निकलनेवाले सम्पूर्ण जलको समेटकर हिमालय उसे भारतभूमिपर उलीचता चला जाता है। जलकी एक बूँद भी दूसरी ओर नहीं जा पाती।

सिन्धु-गङ्गा मैदान

हिमालयपर्वतका जल सिन्धु, गङ्गा, ब्रह्मपुत्र एवं इनकी अनेक सहायक नदियोंके मार्गसे भारतभूमिपर प्रवाहित होता है। यह जल अपने साथ विपुल मात्रामें जीवनदायिनी मृदा लेकर आता है। अनादिकालसे भारतभूमिको आच्छादित करती चली आ रही हिमालयकी इस उर्वर मृदासे सिन्धु-गङ्गाके इस भव्य मैदानका निर्माण हुआ है।

यह मैदान अपनी प्राचीनता, विशालता, उर्वरता, समतलता एवं गहराईके लिये विश्वभरमें विख्यात है। पश्चिममें सिन्धुसागरसे लेकर पूर्वमें गङ्गासागरतक विस्तृत यह मैदान ३,००० किलोमीटर लंबा और २५० किलोमीटर चौड़ा है। इस मैदानका विस्तार भारतभूमिके कुल क्षेत्रफलके पाँचवें भागके समान है। इतना विशाल यह क्षेत्र पूरे-का-पूरा कृषियोग्य है और यह विश्वके सर्वाधिक उर्वर क्षेत्रोंमें से एक है।

पचासके दशकमें तब सद्यस्वतन्त्र भारतकी सहज सम्पदाओंका आकलन करते हुए एक अमरीकी समाजविज्ञानी इस मैदानका वर्णन ऐसे करते हैं–

"नदियोंके आप्लावनसे प्रतिवर्ष इस मैदानकी मिट्टीके बड़े भागका नवीनीकरण हो जाता है। इस प्रकार नदियों द्वारा पहाड़ोंसे लायी गयी यह मिट्टी अत्यन्त मृदु एवं सूक्ष्म होती है। कहा जाता है कि आप चाहे चलते-चलते इस पूरे मैदानको लाँघ जायें, मार्गमें आप कहीं एक छोटा-सा कंकड़ भी नहीं पायेंगे। मिट्टीकी परत इस मैदानके प्रायः ८ करोड़ हेक्टेयरके क्षेत्रमें अत्यन्त समतलतासे और अत्यन्त गहराईतक बिछी है। इसकी गहराईका सही-सही अनुमान तो कभी नहीं लगाया जा सका, कई स्थानोंपर १,३०० फुटतक खोदनेपर भी चट्टानी तलका कहीं अतापता नहीं चल पाया। और इस मैदानकी समतलता ऐसी है कि पहाड़-पहाड़ी तो दूर रहे, कहीं कोई टीला भी धरातलकी एकरसताको तोड़ता दिखाई नहीं देता। सिन्धु एवं गङ्गाके नदीमुखोंके प्रायः मध्यमें और नदीमार्ग द्वारा समुद्रतलसे २,००० किलोमीटर दूर स्थित आगरामें धरातल समुद्रतलसे मात्र ५५० फुट ऊँचा उठ पाता है। इस अद्भुत समतलताके कारण यहाँकी नदियाँ मन्थर गतिसे चलती हुई इस समस्त भूमिका भलीभाँति निषेचन करती चली जाती हैं, इसे उर्वरतासे सम्पन्न करती चली जाती हैं। मन्द गतिसे चलती नदियों पर जलमार्गों एवं सिञ्चाईके लिये नहरों-नालोंकी व्यवस्था भी सुगमतासे हो जाती है। इसीलिये यह मैदान विश्वमें कृषियोग्य भूमिके सबसे बड़े विस्तारोंमें से एक है, विश्वके महानतम कृषिक्षेत्रोंमें इसकी गणना होती है।"

आज आधुनिक तकनीकोंके माध्यमसे हिमालयके समानान्तर लगते क्षेत्रमें मिट्टीकी परतकी गहराई ८,००० मीटरतक मापी जा चुकी है। पूरे मैदानकी माध्य गहराई अब १,३०० से १,५०० मीटरतक आँकी जाती है। इतनी गहराईवाला कोई मैदान विश्वमें कहीं अन्य मिलना प्रायः असम्भव है।